“विक्टर व रोज़ली”

एक छोटा सप्ताह

लेखन व चित्रः ईवा एरिकसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ईवा ऊब चुकी है। खेलने को उसके पास कोई है ही नहीं। उसका भाई बहुत ही छोटा है और उसके माता-पिता अपना सारा समय बोलत-बतियाते गुज़ारते हैं।

तब एक दिन, गलती से फोन पर वह विक्टर तक पहुँचती है। (दरअसल वह फोन तो पुलिस को करना चाह रही थी ताकि अपने छोटे भाई को गिरफ्तार करवा सके)।

विक्टर, रोज़ली को अपने जन्मदिन की दावत में बुलाता है, पूरे सप्ताह भर बाद। पर रोज़ली के लिए समय सापेक्ष है। पाठक यह जान कर हंसेंगे कि रोज़ली किस तरह एक सप्ताह को एक दिन में बदल देती है और विक्टर के साथ "कम से कम सौ घंटे" खेलती है।

“विक्टर व रोज़ली”
एक छोटा सप्ताह

लेखन व चित्रः ईवा एरिकसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

एक छोटा सप्ताह

रोज़ली के पास खेलने को कोई था ही नहीं। वह ऊब चुकी थी।

उसका छोटा भाई बहुत ही छोटा था।

उसे खेलना आता ही नहीं था।

उसे तो खाना तक नहीं आता था

क्योंकि उसके अब तक दाँत ही नहीं थे।

वह केवल पीना जानता था।

"यह पियो!" रोज़ली ने उससे कहा।

"पियो और जल्दी से बड़े हो जाओ

तकि हम दोनों खेल सकें।"

पर मार्टिन बहुत ही धीमे-धीमे बड़ा हो रहा था।

सच कहें तो वह बड़े होने से कहीं ज़्यादा डकार लेता था।

रोज़ली ने गहरी साँस भरी

“यह तो तय है कि हम इस सप्ताह

साथ खेल नहीं सकेंगे।”

तब रोज़ली को कुछ मिला! एक नन्हा सा भूत जो

उसके कपड़ों की अल्मारी के नीचे रहता था। वह अपनी आवाज़ खो चुका था।

लिहाज़ा अब वह किसीको डरा नहीं सकता था।

सो वह भी ऊब चुका था, ठीक रोज़ली की तरह।

"देखो तो मुझे क्या मिला!" रोज़ली ने कहा।

"एक नन्हा ऊबा हुआ भूत!"

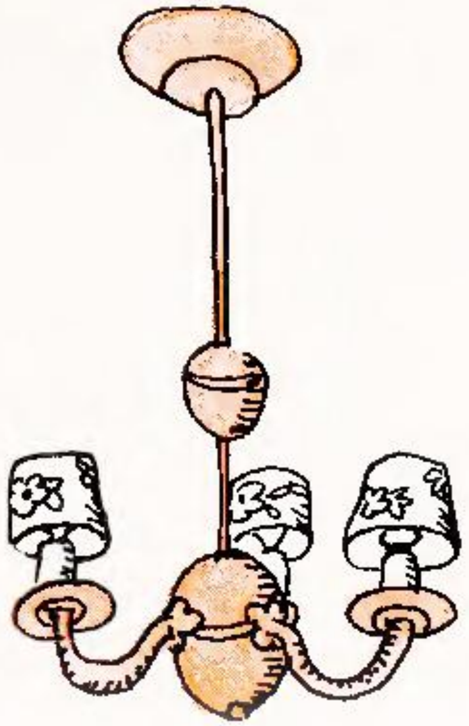

पर ममा और पापा ने कोई ध्यान ही नहीं दिया

वे आपस में बतियाते, और बोलते, और-और बोलते रहे।

“हो सकता है मार्टिन को भूत पसन्द हों,” रोज़ली ने सोचा।

पर मार्टिन सिर्फ चबाना चाहता था।

उसने भूत को झपटा और अपने पोपले मुँह में उसे ठूंस दिया।

“तुमने तो भूत को मार ही डाला!” रोज़ली चीखी।

“मैं पुलिस को फोन करती हूँ। तुम ज़रा ठहरो तो!”

रोज़ली ने कई नम्बर घुमाए -

कई आठ, सात और शून्य, और कई दूसरे भी।

"मेरे छोटे भाई ने मेरे प्यारे-से नन्हे भूत को खा लिया है,"

वह फोन पर फुसफुसाई।

"मेहरबानी से फौरन आओ और उसे ले जाओ।"

पर जिस आदमी ने फोन उठाया

वह पुलिस वाला था ही नहीं।

उसकी भूत खा जाने वाले छोटे भाइयों में कोई रुचि नहीं थी।

उसकी तो एक बारहसिंगे को लेकर अपनी ही समस्याएं थीं।

रोज़ली ने कुछ और नम्बर घुमाए।
इस बार एक लड़के ने फोन उठाया। उसका नाम विक्टर था,
और वह 27, ब्लैकिंग एवन्यू में रहता था।
उसे छोटे बच्चों के बारे सब कुछ मालूम था,
और खेलने वाला कोई नहीं होने
और ऊब महसूस करने के बारे में भी।

''तुम मेरी सालगिरह की दावत में आना,'' विक्टर बोला।
''वह बस एक छोटे सप्ताह के बाद ही है।''

अगले दिन रोज़ली ने अपना एक चित्र बनाया।

यह चित्र विक्टर के लिए एक तोहफ़ा था।

तब उसने अपनी टोपी को सजाने के लिए रिबन से

एक सुन्दर बो (गांठ) बनाई।

"बो बनाना आसान नहीं," उसने खुद से कहा।

"यह सचमें मुश्किल काम है।"

पर बो रोज़ली के फ्रॉक पर ज़्यादा फबी।
रोज़ली पूरी तरह तैयार थी।
अब उसके पास इन्तज़ार करने के सिवा कोई काम नहीं था।
“बस काफी हो गया!” रोज़ली ने दो बजे कहा।
“मुझे पक्का भरोसा है कि
एक छोटा सप्ताह अब तक गुज़र चुका होगा।”

“मैं अभी ही विक्टर के घर जाती हूँ।”

रोज़ली झट निकल पड़ी।

उसे भरोसा था कि वह विक्टर का घर खोज लेगी।

रोज़ली अपनी सड़क के छोर पर मुड़ी ही थी

जब उसे महिला मिली।

उस महिला ने सोचा के रोज़ली खो गई है।

"तुम रहती कहाँ हो छोटी बच्ची?" उसने पूछा।

रोज़ली ने अपने घर का पता बताया।

पर उसे आगे कुछ और जोड़ने का समय ही नहीं मिला।

महिला उसका हाथ थाम ठीक

उसके घर के सामने वापस ले आई।

''इस तरह तो मैं विक्टर की दावत पर कभी पहुँच ही नहीं सकूंगी,''
रोज़ली ने कहा, और वह इतनी ज़ोर से चीखी
कि उसके सारे के सारे दाँत दिखने लगे।

एक आदमी कहीं से दौड़ता हुआ आया।
उसे अपना मुँह खोलने का समय ही नहीं मिला था कि
रोज़ली बोल पड़ी, ''27 ब्लैकिंग एवन्यू।''
वह आदमी फौरन ही रोज़ी को सही ठिकाने पर ले गया।

इस तरह आख़िरकार रोज़ली विक्टर के घर पहुँची।
“मुझे खुशी है कि तुम तुरन्त ही आ गई,” विक्टर ने उससे कहा।
“दिनों-दिन इन्तज़ार करना बेवकूफी होता।
हम अभी से दावत शुरु कर देते हैं।”

रोज़ली और विक्टर घंटों खेले।
कम से कम सौ घंटों तक। विक्टर की माँ ने
रोज़ली के माता-पिता को फोन किया,
और वे भी विक्टर के घर आ गए। पर विक्टर और
रोज़ली ने खेलना बन्द नहीं किया।

जब सभी माता-पिता और छोटे बच्चे नींद में डूब गए

विक्टर और रोज़ली

तब भी खेल रहे थे।

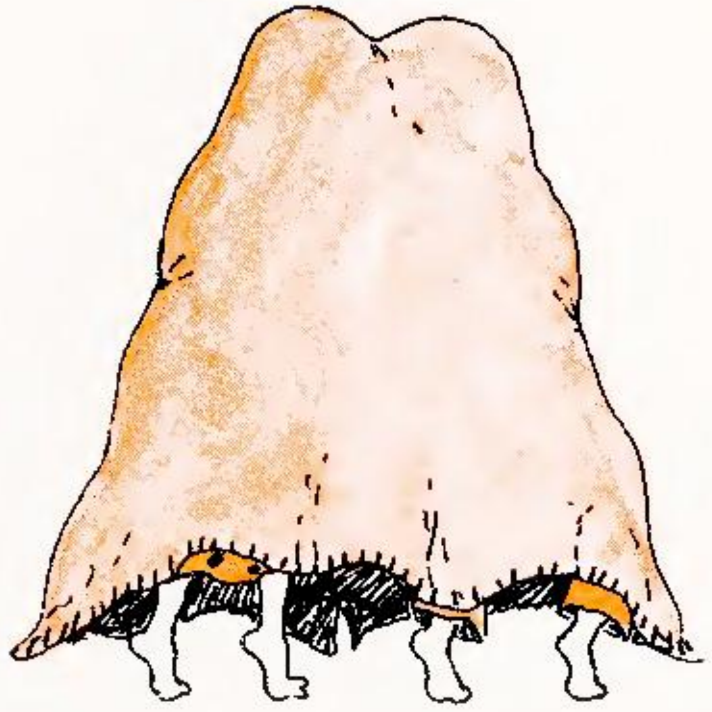

वे पूरी रात खेलते रहे

बिना शोर किए।

माता-पिता या शिशुओं में

कोई भी, एक भी बार नहीं हिला।

ईवा एरिकसन

लेखिका के बारे में

ईवा एरिकसन दक्षिणी स्वीडन के कस्बे हैमस्टैड में जन्मीं और पली-बढ़ीं। वहाँ से वे बाद में स्टॉकहोम गईं, जहाँ उन्होंने कला का अध्ययन किया। सुश्री एरिकसन ने अपने बेटे ओले के जन्म के कुछ ही समय बाद लेखिका व चित्रकार के रूप में काम करना शुरु किया। उस वक्त लिखी गई उनकी कहानियाँ उनके बेटे ओले के लिए और उसके बारे में थीं। ये कहानियाँ बाद में विक्टर तथा रोज़ली के बारे में चार किताबों का आधार बनीं। बच्चों के लिए लिखी गई उनकी किताबों को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली। 1981 में उन्हानें चित्रों के लिए दिया जाने वाला एल्सा बेस्को प्लैकेट पुरस्कार जीता। उसी वर्ष उन्हें स्वीडी समाचार पत्र *एक्सप्रैसन* के वार्षिक सवश्रेष्ठ बाल पुस्तक के पुरस्कार *हैफालम्प* से भी नवाज़ा गया। वे अपने पति ओर दो बच्चों के साथ स्टॉकहोम के बाहर रहती हैं।

ईवा एरिकसन का जन्म हैमस्टैड, स्वीडन में हुआ। उन्होंने स्टॉकहोम में कला का अध्ययन किया। 1973 में उनके पहले बेटे ओले के जन्म ने उन्हें बाल कथाओं को लिखने और चित्रों से संवारने की प्रेरणा दी। उन्होंने बाद में कई किताबों की रचना की जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हुईं। फिलहाल वे अपने पति और दो बच्चों के साथ स्टॉकहोम के बाहर रहती हैं।

विक्टर व रोज़ली के पात्रों को लेकर उन्होंने तीन अन्य किताबें भी रचीं: *होकसपोकस, जैलसी,* तथा *द टूथ ट्रिप।*